ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 866-869
www.allresearchjournal.com
Received: 15-11-2016
Accepted: 16-12-2016

डॉ. उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला-वलसाड, गुजरात

Correspondence
डॉ. उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला-वलसाड, गुजरात

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी

डॉ. उत्तम पटेल

सारांश
कहानी हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। इस विधा ने अपने प्रारंभ काल से अब तक बहुत सारे उतार चढाव देखे हैं। आजादी के बाद कहानी साहित्य नई कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी, समांतर कहानी, साठोत्तरी कहानी आदि विभिन्न संज्ञा धारण कर कथ्य और शिल्प की दृष्टि से वैविध्यशाली बनी है। आज की कहानी तो नये शिल्प विधान के साथ समकालीन तथ्यों व सत्यों को वास्तव की जमीन पर उजागर कर रही है।

कूट शब्द: नई कहानी, संवेदना, नई भावभूमि, नवीन शिल्प।

प्रस्तावना
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का प्रारंभ 1950 के आसपास माना जाता है। डॉ.नामवरसिंह ने निर्मल वर्मा की 'परिंदे' कहानी को पहली नई कहानी माना है। उन्हीं के शब्दों में- "फ़कत सात कहानियों का संग्रह 'परिंदे' निर्मल वर्मा की ही पहली कृति नहीं है बल्कि जिसे हम 'नयी' कहानी कहना चाहते हैं, उसकी भी पहली कृति है। " [1]

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी सचेतन कहानी, अकहानी, समांतर कहानी, साठोत्तरी कहानी आदि नामों से विकसित होती रही। इस कहानी में रूढियों के प्रति विद्रोह, स्थापित के प्रति विद्रोह गहराई से अभिव्यक्ति हुआ है। "स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी परिवर्तित मूल्यों से उत्पन्न संघर्ष की कहानी है। इसलिए आज की कहानी को एक साथ ही 'मूल्य भंग और मूल्य-निर्माण' की कहानी कहा गया है।" [2] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी की मुख्य विशेषताएँ हैं-

1 वैयक्तिक स्वातंत्र्य पर जोर
2 व्यक्ति के निजी अनुभव को निरपेक्ष होकर आँकना
3 व्यक्ति मन की गाथा को उजागर करना
4 द्वितीय महायुद्धोत्तर जीवन का चित्रण
5 जीवन की परिवर्तन शीलता और नारी-संबंधी मूल्यों का चित्रण

6 वातावरण और सामाजिक परिपेक्ष्य की प्रधानता
7 अनुभूति की प्रामाणिकता के साथ जीवन की समग्रता का रूपायन
8 नैतिक-बोध, जीवन-मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता
9 स्वप्न-भंग व्यक्ति का चित्रण
10 वर्तमान में क्षण-भोग के प्रति आसक्ति।
11 उदासीनता और अकेलापन कहानीकारों पर हावी।

नई कहानी की प्रतिक्रिया फलस्वरूप अ-कहानी और सचेतन कहानी-आंदोलनों का जन्म हुआ। 1960 के बाद की कहानी मनुष्य के मस्तिष्क के भीषण संकट-बोध की यथार्थ प्रतीति की कहानी है। अ-कहानी कथा के स्वीकृत आधारों का निषेध तथा किसी तरह के मूल्य स्थापन का अस्वीकार है। [3] सचेतन कहानी के प्रतिनिधि लेखक और प्रवक्ता डॉ.महीप सिंह हैं। [4] सचेतन कहानी मनुष्य को उसकी Totality में देखना चाहती है।

आज की कहानी की सबसे बड़ी विशेषता है-

1. नई भावभूमि-स्थितियों की खोज।
2. यह आधुनिकता से अंतर-गुंफित है, परंपरा के प्रति आस्था और आसक्ति उसमें नहीं है।
3. इनमें संवेदना का विस्तार है। ये ऐतिहासिक व्यक्ति को पारिभाषित करती हैं।
4. रुकी हुई जिंदगी पर सबसे सर्वाधिक लेखन।
5. सामाजिक-बोध,जीवन के विविध पक्षों के उभरे-दबे-कोनों को उजागर करना।

6 स्त्री-पुरूष के नये संबंधों पर सबसे अधिक लिखा गया। संबंधों के टूटन की कहानियाँ जैसे-'एक प्लेट सैलाब', 'घुटनें', 'यही सच है' (मन्नू भंडारी), 'तीसरा गवाह', 'अंतर' (निर्मल वर्मा), 'दिवा स्वप्नी' (ज्ञानरंजन), 'तिन पहाड़'(कृष्णा सोबती), 'मछलियाँ' (उषा प्रियंवदा), 'बैल' (मणि मधुकर), 'अभी तो मैं जवान हूँ' (भीष्म साहनी) आदि इसके सुंदर उदाहरण हैं।

7 साठोत्तरी कहानी में भी घोर सेक्स, देहवाद और सेक्सिका नारी का चित्रण किया गया। यौनाचार ने व्यावसायिकता का रूप धारण कर लिया। जैसे- 'मिस पाल', 'सैफ्टी पीन' (मोहन राकेश), 'तीसरा सुख' (गिरिराज किशोर), 'छलांग' (ज्ञानरंजन), 'खेल का मैदान' (श्रीकांत वर्मा), 'एक आधुनिक औरत की मौत' (स्वदेश दीपक) आदि। नौकरी-पेशा नारी की समस्या, नारी के जीवन की जटिलताएँ-दुरूहता का चित्रण इस दौर की 'ग्लास टैंक' (मोहन राकेश), 'दूसरे की पत्नी के पत्र' (नरेश मेहता), 'जहाँ लक्ष्मी कैद' (राजेन्द्र यादव), 'एक असमर्थ हिलता हाथ' (अमरकांत), 'सिक्का बदल गया' (कृष्णा सोबती), 'तेवर' (रमाकांत) आदि कहानियों में बखूबी हुआ है।

8 प्रेम-भावना के विविध आयाम, बेरोजगारी-इण्टरव्यू का नाटक-भाई-भतीजावाद तथा बेईमानी-फालतू-बेमानी-बेकार-दिशाहीनता में भटकते युवकों का चित्रण 'झाडी' (श्रीकांत वर्मा), 'कुत्ते की मौत' (निर्मल वर्मा), 'मकान' (प्रयाग शुक्ल), 'छिपकली' (अमरकांत), 'बेकार आदमी' (कमलेश्वर), 'खुशबू' (राजेन्द्र यादव) में हुआ है।

9 नई पीढ़ी की कुण्ठा, निराशा, घुटन, आस्थाहीनता तथा अविश्वास को व्यक्त किया गया है। जैसे - 'पास-फैल' (यादव), 'देवा की माँ' (कमलेश्वर), 'खुले हुए दरवाजे' (उषा प्रियंवदा), 'कुत्ते की मौत', (निर्मल वर्मा) आदि में।

10 दो पीढ़ियों का संघर्ष-वॉर ऑव जनरेशन- 'वापसी' (उषा प्रियंवदा), 'यह मेरे लिए नहीं' (धर्मवीर भारती), 'पास-फेल' (राजेन्द्र यादव), 'जंगला' (राकेश), 'देवा की माँ' (कमलेश्वर), 'गुलरा के बाबा' (मार्कण्डेय)

11 आँचलिकता के आधार कहानियों का सर्जन-शैलेष मटियानी, 'रेणु' ('तीसरी कसम'), मार्कण्डेय ('हंसा जाई अकेला', 'माही'), अरुण प्रकाश ('भइया एक्सप्रेस'), स्वयं प्रकाश ('क्या तुमने कभी कोई सरदार भिखारी देखा है'), संजीव, महेश कटारे, शिवमूर्ति, अमरकांत ('मूस'), शेखर जोशी ('दाजू', 'हलवाहा'), रमाकांत ('तेवर') ने किया है।

ये कहानियाँ शिल्प विधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। नई कहानी के पात्र कुछ करते नहीं, केवल सोचते हैं। इन कहानियों में अस्पष्टता और दुरूहता स्पष्ट लक्षित होती है। कथ्य और व्यावहारिक जीवन में अंतर्विरोध इनका प्रमुख लक्षण है। इन कहानियों में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग तथा कथानक का ह्रास है। जैसे - 'टेबुल' ('रेणु'), 'सिलसिला' (राजेन्द्र यादव), 'हरिनाकुश का बेटा' (धर्मवीर भारती), 'मंदी' (मोहन राकेश), 'तिरिछ' (उदय प्रकाश)

कहानीकार संकेतों के द्वारा सारी बातें स्पष्ट करता है जो इस कहानी के शिल्प का प्रौढ रूप है। जैसे-'सावित्री नंबर दो' (घर्मवीर भारती), 'जख्म' (मोहन राकेश), 'निशा जी' (नरेश मेहता), 'मछलियाँ' (उषा प्रियंवदा), 'अभिनेता' (मन्नू भंडारी)।

पिछली कहानियाँ जहाँ समाप्त होती हैं वहीं से आज की कहानी प्रारंभ होती है। जैसे-'एक कटी हुई कहानी' (राजेन्द्र यादव), 'कुत्ते की मौत' (निर्मल वर्मा), 'शवयात्रा' (श्रीकांत वर्मा)

शिल्प के क्षेत्र में प्रयोगशीलता है। जैसे फैंटेसी-मिथक एवम् प्रणय-गाथाओं का प्रयोग किया गया है।

ये कहानियाँ पाठक को दर्शक के रूप में नहीं, सहभोक्ता के रूप में स्वीकार करती हैं। लेखक का पूरा इन्वाल्वमेंट ये कहानियाँ चाहती हैं। कोरी भावुकता या रोमांस उसका अंग नहीं है।

प्रमुख कहानीकारों की प्रसिद्ध कहानियाँ

1. शिव प्रसाद सिंह-'कर्मनाशा की हार', 'बीच की दीवार', 'वशीकरण', 'बरगद का पेड़', 'अंधकूप', 'सुबह के बादल', 'प्रायश्चित', 'नन्हों' आदि।
2. नरेश मेहता-'एक समर्पित महिला', 'अनबीता व्यतीत', 'तिष्यरक्षिता की डायरी', 'किसका बेटा' आदि।
3. धर्मवीर भारती-'धुआँ', 'गुल की बन्नो', 'सावित्री नम्बर दो', 'यह मेरे लिए नहीं', 'बंद गली का आखिरी मकान' आदि।
4. मोहन राकेश-'आर्द्रा', 'अपरिचित', 'मलबे का मालिक', 'मिस पाल', 'परमात्मा का कुत्ता', 'एक और जिंदगी'।
5. कमलेश्वर-'नीली झील', 'कस्बे का आदमी', 'खोई हुई दिशाएँ', 'ऊपर उठता हुआ 'मकान', 'मांस का दरिया'।
6. राजेन्द्र यादव- 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'टूटना' आदि।
7. निर्मल वर्मा-'माया दर्पण, 'परिन्दे', 'लंदन की एक रात' आदि।
8. रेणु-'तीसरी कसम', 'तीर्थोदक', 'रसप्रिया', 'लाल पान की बेगम', 'ठेंस', 'तीन बिंदिया' ।
9. भीष्म साहनी-'चीफ की दावत', 'सिर का सदका', 'पहला पाठ', 'इन्द्रजाल'।
10. उषा प्रियंवदा-'वापसी, 'कोई नहीं', 'खुले हुए दरवाजे', 'जिंदगी और गुलाब के फूल'।
11. मन्नू भंडारी-'यही सच है', 'तीसरा आदमी', 'कील और कसक', 'ईसा के घर इंसान'।
12. गिरिराज किशोर-'पगडंडियाँ', 'फ्रॉक वाला घोड़ा', 'पेपरवेट'।
13. सुरेश सिंहा-'एक अपरिचित', 'सुबह होने तक', 'तट से टूटे हुए', 'कई कुहरे', 'मृत्यु और..., उदासी के टुकड़े', 'कई आवाजों के बीच'।

इनके अतिरिक्त ज्ञानरंजन की 'फेंस के इधर उधर', 'यात्रा', 'सीमाएँ', 'मृत्यु', रवीन्द्र कालिया की 'बड़े शहर का आदमी', 'नौ साल छोटी पत्नी', रामदरश मिश्र की 'खाली घर', 'एक वह', 'एक औरत एक जिंदगी', सुघा अरोड़ा की 'अपना अपना डर', 'दहलीज पर संवाद', महीपसिंह की 'घिराव', 'कुछ और कितना', कृष्णा सोबती की 'मित्रो मरजानी', 'यारों के यार', 'तीन पहाड़', शेखर जोशी की 'दाज्यू', 'कोसी का घटवार', वेद राही की'बर्फ', 'आर्टिस्ट', रघुवीर सहाय की 'रास्ता इधर से है', सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की 'कच्ची सड़क', 'शानी की बिरादरी', रामकुमार की 'लौ पर रखी हथेली', मंजुल भगत की 'गुलमहोर के गुच्छे', मणि मधुकर की 'भाई का जख्म', मृदुला गर्ग की

'कितनी कैद', हिमांशु जोशी की 'मनुष्य चिह्न', अभिमन्यु अनंत की 'खामोशी के चीत्कार', अमरकांत की 'हत्यारे', 'जिंदगी और जोंक', 'मूस', 'दोपहर का भोजन', 'बौरेया कोदो', आदि कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, कात्यायनी, सूर्यबाला, सुधा अरोड़ा, श्रीमती विजय चौहान आदि उल्लेखनीय हैं।

निष्कर्ष- इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी ने युग के अनुरूप अपने को ढाला है। इन कहानियों में स्थापित के प्रति विद्रोह, मूल्यों से उत्पन्न संघर्ष, वैयक्तिक स्वातंत्र्य, उदासीनता और अकेलापन, संवेदना का विस्तार, रुकी हुई जिंदगी, जीवन के विविध पक्षों, स्त्री-पुरूष के नये संबंधों, प्रेम-भावना के विविध आयाम एवम् नई पीढ़ी का चित्रण किया गया है। ये कहानियाँ शिल्प विधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इसके पात्र केवल सोचते हैं। इनमें अस्पष्टता और दुरूहता है। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग तथा कथानक का ह्रास है इसकी मुख्य विशेषता है। जो इस कहानी के शिल्प का प्रौढ रूप है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, नामवर, कहानी नयी कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2012. पृष्ठ-53
2. अब्दुल जलील, वी.के. (संपा.), आधुनिक हिंदी साहित्यः विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2000, पृ.109
3. मदान, इन्द्रनाथ (संपा.), हिंदी कहानीःपहचान और परख,लिपि प्रकाशन,दिल्ली, 1973, पृ.93
4. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2009, पृ.112